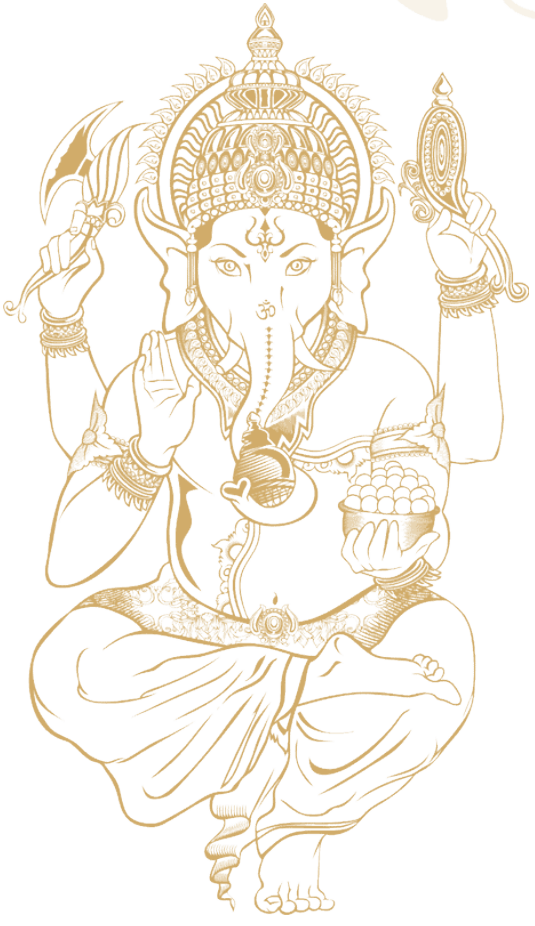

Mr.G

19 Dec 2025

12:30 AM

Bhilwara

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120625601**

तिथि 19/12/2025 **समय** 00:30:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Bhilwara **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:16
अक्षांश 25:23:00 उत्तर **रेखांश** 74:39:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:31:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	05:49:10 घं
वेलान्तर	00:02:54 घं
सूर्योदय	07:11:30 घं
सूर्यास्त	17:44:49 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	14
नक्षत्र	ज्येष्ठा
योग	शूल
करण	शकुनि

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	नो-नोनी
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	शनि
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

बुध 14वर्ष 2मा 19दि

बुध

19/12/2025
08/03/2040

	19/12/2025
केतु	02/08/2026
शुक्र	02/06/2029
सूर्य	08/04/2030
चन्द्र	08/09/2031
मंगल	04/09/2032
राहु	24/03/2035
गुरु	29/06/2037
शनि	08/03/2040

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 2मा 5दि

भद्रिका

19/12/2025
23/02/2030

	19/12/2025
उल्का	04/09/2026
सिद्धा	25/08/2027
संकटा	04/10/2028
मंगला	24/11/2028
पिंगला	05/03/2029
धान्या	04/08/2029
भ्रामरी	23/02/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			03:19:56	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	शनि	---	0:00			
सूर्य			02:53:29	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि	1.00	ज्ञाति	पितृ	सम्पत
चंद्र			18:50:50	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	केतु	नीच राशि	1.22	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	08:24:20	धनु	मूल	3	केतु	गुरु	मित्र राशि	1.25	पुत्र	भ्रातृ	सम्पत
बुध			14:54:49	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	सम राशि	0.97	मातृ	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु	व		28:44:44	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.22	आत्मा	धन	मित्र
शुक्र		अ	28:21:39	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	शनि	सम राशि	1.21	अमात्य	कलत्र	जन्म
शनि			01:19:01	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	1.24	कलत्र	आयु	मित्र
राहु	व		18:01:07	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	सूर्य	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		18:01:07	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	मंगल	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

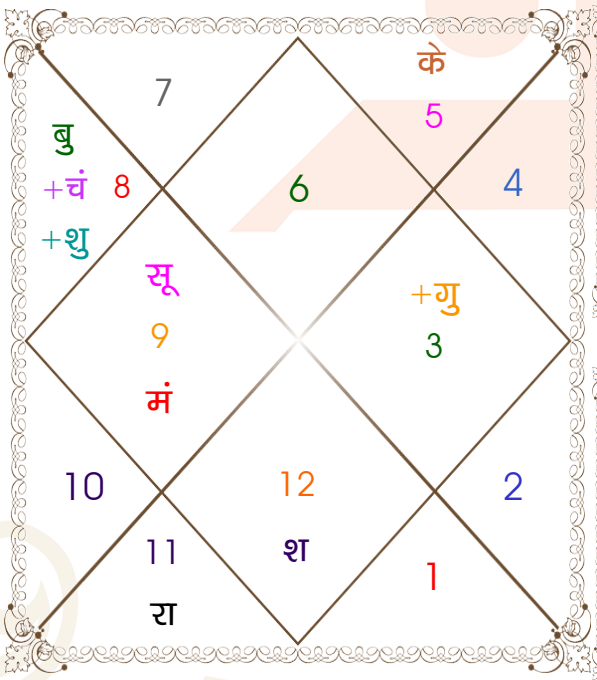

चन्द्र कुंडली

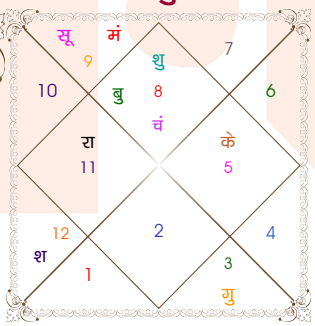

नवमांश कुंडली

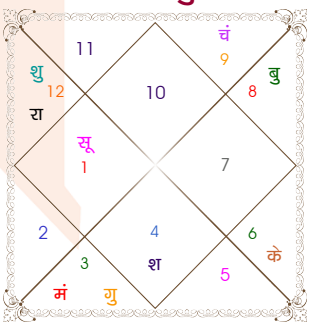

सर्वाष्टकवर्ग

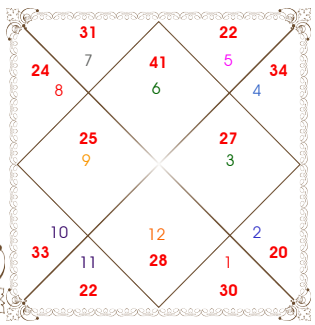

दशमांश कुंडली

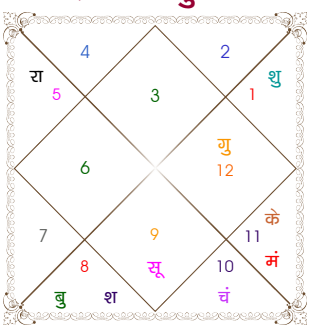

नक्षत्रफल

आप ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, वर्ग सर्प, गण राक्षस, योनि मृग तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "नो" या "नौ" अक्षर से होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न हुई हैं। अतः इस नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण जातक के बड़े भाई को अरिष्ट होता है। अतः जन्म समय में गण्डमूल नक्षत्र की विधि पूर्वक किसी योग्य विद्वान के द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए नक्षत्र के कम से कम 28000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार शास्त्रीय विधि से जप तथा हवनादि करने से इसका अनिष्ट प्रभाव हीन हो जाता है तथा सम्बन्धित व्यक्ति सुखी रहता है।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त महिला होंगी तथा दूर दूर तक लोग आपके विषय में ज्ञान रखेंगे। आपका सौन्दर्य मनोहरी रहेगा तथा शरीर में कान्ति एवं लावण्यता की बहुलता रहेगी। विविध प्रकार के धन वैभव से आप सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक धनवान तथा सामर्थ्यशाली महिला रहेंगी तथा जीवन के प्रत्येक कार्य को करने में सक्षम रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला रहेंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी तथा आप एक लोकप्रिय तथा सम्मानित महिला समझी जाएंगी। आपमें नेतृत्व तथा वक्तृत्व शक्ति की प्रवलता रहेगी तथा से सबको अपने चतुराई पूर्ण भाषण से प्रभावित करेंगे।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

कभी कभी आप अकारण ही अधिक मात्रा में क्रोध का प्रदर्शन करेंगी जिससे आप आर्थिक हानि या मानसिक संताप प्राप्त करेंगी। धर्म एवं ईश्वर के प्रति आपके मन में आस्था

रहेगी तथा श्रद्धा पूर्वक इसका अनुपालन करने के लिए हमेशा यत्न शील रहेंगी।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक क्रोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपकी मित्रता का क्षेत्र अत्यन्त ही विस्तृत रहेगा तथा मित्रवर्ग में आप मुख्य तथा लोकप्रिय रहेंगी। आप स्वभाव से भी सन्तोषी होंगी तथा अपनी उपलब्धि पर ही सन्तोष रखेंगी। अनावश्यक इच्छाएं आपके मन में कम ही रहेंगी। लेकिन क्रोध पर आप का नियंत्रण अल्प ही रहेगा।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरकोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा क्रोधी होता है।

आपका स्वभाव से ही लेखन कार्य के प्रति रुझान रहेगा तथा कवितादि लिखने में आप सफल रहेंगी। सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगी तथा दुःख सुख को समान रूप से समझेंगी। आप अत्यन्त ही चतुर महिला होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यकलापों को चतुराई से ही सम्पन्न करेंगी। आप निम्न श्रेणी के लोगों के लिए हमेशा अत्यन्त ही पूजनीय तथा सम्माननीय रहेंगी तथा इनके मध्य काफी लोकप्रियता भी अर्जित करेंगी।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही

अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका वक्षस्थल विस्तृत तथा आखें बड़ी एवं सुन्दर होगी। साथ ही शारीरिक वर्ण में अल्प श्यामलता का समावेश भी हो सकता है। आप के हाथ या पैर में मत्स्य का चिन्ह भी अंकित हो सकता है। परन्तु हाथ की रेखाएं वज्र तथा पक्षी के आकार की रहेंगी। माता पिता तथा गुरूजनों से आपके संबंध उच्छे रहेंगे। अतः इनसे आपको स्नेह तथा सहयोग की प्राप्ति भी उपलब्ध होती रहेंगी। बचपन में आप काफी मात्रा में रोग ग्रस्त रहेंगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा चतुरता का भाव भी इसमें विद्यमान रहेगा। अतः अपने बुद्धि चातुर्य तथा परिश्रम से राज्य में कोई उच्च पद प्राप्त कर सकेंगी। क्रूर तथा कठोर कार्यो को करने में रूचिशील होने के कारण आप सेना, पुलिस या सर्जरी विभाग में कार्यरत हो सकेगी। आपकी प्रवृति कभी कभी दुष्टता से भी युक्त रहेंगी अतः अन्य जन इससे कष्ट प्राप्त करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका मस्तक तथा उदर भी दीर्घ आकार का होगा। आपके मन में लोभ की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति आपके मन में लोलुपता के भाव की उत्पति होगी। आपका शरीर लावण्यता से युक्त रहेगा। धर्म तथा ईश्वर के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी। समय के अनुसार चोरी आदि करने में भी आप उद्यत रहेंगी। आपकी ठोड़ी तथा नाखून में चोट आदि का निशान रहेगा। धन तथा वैभव का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। कई कार्यो को करने में आप व्यस्त रहेंगी। बन्धुओं से भी आपको सहयोग की प्राप्ति हो सकेगी। साथ ही आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप में उग्रता का भाव भी रहेगा तथा सरकारी मुकददमे या अन्य कारण से आप सरकार के द्वारा आर्थिक दण्ड प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य जनों के प्रति भी आप के मन में प्रेमभा रहगो।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनाढ्य महिला होंगी तथा अपने विस्तृत परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों को भी सुख प्रदान करेंगी। पुरूषों के संबंध में आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेंगी तथा इनसे पूर्ण सहयोग सम्मान तथा लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगी। सरकार की सेवा में भी आप नियुक्त

रहेंगी। लेकिन आप हमेशा दूसरे के धन को स्वयं प्राप्त करने के लिए लालयित रहेंगी तथा सम्पूर्ण जीवन इसके लिए प्रयत्न भी करती रहेंगी। आप की दृढ़मति रहेगी एवं किसी भी कार्य को दृढ़ ता से पूर्ण करेंगी कार्यारम्भ करके मध्य में छोड़ना आपकी प्रवृति के विपरीत होगा। आप नित्य अपने उद्यमों में भी रत रहेंगी तथा साहस एवं निर्भयता से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप यदा कदा जुआ आदि खेलने के लिए भी उद्यत होंगी। लेकिन इससे आपको आर्थिक रूप से हानि ही अधिक होगी। आपके स्वभाव में क्रोधाधिक्य के कारण आप अन्य जनों से विवाद आदि करने में भी तत्पर रहेंगी। आप जीवन में बहुत ही कम शान्ति की अनुभूति कर सकेंगी अन्यथा अपने को अशान्त ही महसूस करेंगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप प्रारम्भ से ही घर से अन्यत्र निवास करेंगी तथा घूमने फिरने में भी आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आप स्वभाव से अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगी। अपने संबंधियों तथा बन्धुवर्ग के प्रति आपके मन में स्नेह तथा अपनत्व का भाव रहेगा। साथ ही साहस पूर्वक धनार्जन करने में आप हमेशा सफल रहेंगी।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप कभी कभी व्यर्थ तथा अधिक बोलने वाली होंगी। आपका मन भी कठोरता से युक्त रहेगा तथा कोमल भावनाओं का इसमें न्यूनता रहेंगी। परन्तु आप एक साहसी तथा निर्भीक महिला होंगी एवं साहसपूर्वक अपने समस्त कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। आपका स्वभाव क्रोधी भी होगा तथा अकारण ही छोटी छोटी बातों पर आप उत्तेजित हो जाएंगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा बल का आप में अभाव नहीं होगा। अतः अन्य लोगों से विवाद करने की प्रवृति भी आप में विद्यमान रहेगी। साथ ही समाज में अधिकांश जनों से आपका विरोध भाव चलता रहेगा। अतः अन्यजनों से आपको विनम्रता का व्यवहार करना चहिए।

आप जीवन में उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुल रह सकती हैं। आपकी शारीरिक सुन्दरता मध्यम तथा कभी कभी आपकी वाणी अत्यन्त ही कठोर रहेगी जो श्रोता को कष्ट प्रदान करेंगी। अतः अपने सम्भाषण में आपको मधुर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति स्वच्छन्द रहेगी तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने समस्त कार्यकलापों को करने की इच्छा करेंगी। आप चित से अत्यन्त ही शान्त रहेंगी तथा उपद्रवी भावना का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। साथ ही उत्तम साधनों के द्वारा आप अपनी आजीविका का अर्जन करेंगी। सत्य के पालन करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा अपने बन्धु एवं संबंधियों के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी। सभी लोग आपको हृदय से चाहेंगे। ईश्वर तथा धर्म में भी आपका विश्वास रहेगा तथा नियमपूर्वक धर्मानुपालन में सर्वथा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप एक शूरवीर महिला होंगी तथा विवादों आदि में सर्वत्र विजयी रहेंगी।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

आपके जन्मकाल में सूर्य की स्थिति चतुर्थ भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य

सामान्य रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। धन वैभव से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको सहयोग प्रदान करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आप उनसे समान्यतया धन सम्मान एवं वाहनादि भी प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही वे व्यापार तथा अजीविका सम्बन्धी कार्यों में भी आपकी सहायता करेंगे।

आपके मन में उनके प्रति सामान्य श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा एवं इच्छानुसार यदाकदा उनकी आज्ञा का अनुपालन भी करती रहेंगी। परन्तु आपके आपसी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे एवं परस्पर कई प्रकार के मतभेद विद्यमान रहेंगे फिर भी आप अपनी ओर से उन्हें कम से कम कष्टानुभूति के लिये सतत् प्रयत्नशील रहेंगी एवं अवसरानुकूल उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, षष्ठी, प्रतिपदा, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सफल नहीं हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए तथा नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, तांबा, लाल वस्त्र, चन्दन, गेहूं, मल्का इत्यादि पदार्थों का दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ प्रभावो में भी न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र का किसी योग्य विद्वान से कम से कम 7000 जप करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपके अधिकांश

अशुभ प्रभाव समाप्त होंगे तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।